आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:18-12-14

हम अति भाग्यशाली आत्माओं की कल्प पहले माफिक फिर से मदद लेकर, इस सारी दुनिया को परिवर्तन करने वाले, बेहद के रचयिता बाप ने कहा, मीठे बच्चे - बाप का मददगार बन इस आयरन एजड़ को गोल्डन एजड़ बनाना है, पुरुषार्थ कर नई दुनिया के लिए फस्टॅक्लास सीट रिजर्व करानी है.

हम आत्माये कितनी भाग्यशाली है कि स्वयं परमपिता-परमात्मा, ग़ॉड फादर, नई सृष्टि के रचयिता, इस बेहद के ड्रामा के डायरेक्टर हमारी मदद से इस दुनिया को नई बना रहे हैं. लेकिन बाबा हमारी मदद भी तब लेते है जब कि हमें बाप में पुरा निश्चय हो. बाप कि श्रीमत् को आज्ञाकारी - फरमानवरदार बन कर ऐक्यूरेंट फालो करें. सबसे पहले अन्तरमुखी बन स्व-चिंतन, स्व-दर्शन कर खुद में परिवर्तन करें. इसलिए ही बाबा हमें आत्मा, परमात्मा और सारी सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान दे रहे है.

बाबा की आज की मुरली से आत्मा - परमात्मा पर कहे गये कुछ महा-वाक्यों को स्वयं की आत्मिक अवस्था बनाकर, बाप की याद में पढ़ेंगे तो इसे भी हमारी आत्मा पतित से पावन बनती जायेंगी.

- बाबा कहते है यह है जगत अम्बा (मम्मा) और जगत पिता (ब्रह्मा-बाबा). मदर और फादर कन्ट्री कहते हैं ना. भारतवासी याद भी करते हैं - तुम मात-पिता...तुम्हारी कृपा से सुख घनेरे तो बरोबर मिल रहे हैं. फिर जो जितना पुरुषार्थ करेंगे. बाप भी कहते हैं चाहे सूर्यवंशी, चाहे चन्द्रवंशी में सीट रिजर्व कराओ, जितना जो पुरुषार्थ करें उतना ऊंच पद प्राप्त कर सकते हैं.

- बाप को कहते ही हैं टुथ. मैं सच बतलाता हूँ जिससे सतयुग बन जाता है और द्वापर से लेकर तुम झूठ सुनते आये हो तो उससे नर्क बन पड़ा है.

- बाबा कहते है अभी मैं तुम बच्चों की सेवा में आया हूँ. बाप को निराकारी, निरहंकारी गाया जाता है. तो बाप कहते हैं मेरा फ़र्ज है तुम बच्चों को सदा सुखी बनाना.

- बाबा कहते है तुम सभी बच्चे एक्टर्स हो, मैं इस समय करनकरावनहार हूँ. मैं इनसे (ब्रह्मा से) स्थापना करवाता हूँ. बच्चों को यह सहज ज्ञान और सहज योग सिखलाता हूँ, योग लगवाता हूँ. बच्चे योग सीखकर फिर औरों को सिखलाते हैं ना. बाप की याद से वर्से का भी नशा चढ़ेगा. बाबा माना ही वर्सा.

- बाबा कहते हैं तुम सब मेरी पार्वतियाँ हो, तुमको अमरकथा सुना रहा हूँ.

- बाबा कहते हैं सभी बातों का सैक्रीन है मन्मनाभव. कहते हैं मुझे याद करो तो इस योग अग्नि से विकर्म विनाश होंगे. मैं तो सन्मुख तुम बच्चों को पढ़ा रहा हूँ. कल्प-कल्प अपनी फ़र्ज-अदाई पालन करता हूँ. बच्चे कहते है - शुक्रिया बाबा आपका लाख-लाख शुक्रिया.

बाबा की आज की मुरली से सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त पर कहे गये कुछ महा-वाक्यों को स्वयं की आत्मिक अवस्था बनाकर, बाप की याद में पढ़ेंगे तो इसे भी हमारी आत्मा माया से बची रहेगी.

- भोलानाथ शिव भगवानुवाच - ब्रह्मा मुख कमल से बाप कहते हैं - यह वैराइटी भिन्न-भिन्न धर्मों का मनुष्य सृष्टि झाड़ है ना. इस कल्प वृक्ष अथवा सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज (razz) बच्चों को समझा रहा हूँ. शिवबाबा का जन्म यहाँ है, बाप कहते है मैं आया हूँ भारत में. शिवबाबा कहते है मैं ५ हजार वर्ष बाद फिर से आया हूँ, संगम पर अपना फ़र्ज निभाने. सभी जो भी मनुष्य मात्र हैं, सभी दुखी हैं, उनमें भी खास भारतवासी. ड्रामा अनुसार भारत को ही मैं सुखी बनाता हूँ.

- बाप कहते है ब्रह्मांड में तो आत्मायें अण्डे मिसल रहती हैं, निराकारी झाड़ भी दिखाया गया है. हर एक अपना-अपना सेक्शन है. इस झाड़ का फाउन्डेशन है - भारत का सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी घराना.

- बाप कहते हैं ८४ जन्म सिर्फ तुम आलराउन्डर ब्राह्मणों के हैं. तुम्हारा ही आलराउन्ड पार्ट है. ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तुम बनते हो. जो पहले देवी-देवता बनते हैं वही सारा चक्र लगाते हैं.

- बाबा कहते हैं यह स्कूल है, एक ही टीचर पढ़ाते हैं. नॉलेज एक ही है. एम ऑबजेक्ट एक ही है, नर से नारायण बनने की. तुम जानते हो जब देवतायें थे तो क्षत्रिय नहीं, जब क्षत्रिय थे तो वैश्य नहीं, जब वैश्य थे तो शूद्र नहीं.

ॐ शांति.